इबसा (भारत,ब्राजील,दक्षिण अफ्रीका)

***कु0गायत्री देवी**

आज आर्थिक क्षेत्र में दुनिया दो भागों में बटी हुई है। उत्तर और दक्षिण। ष्उत्तरष् अमीर देशों का प्रतीक है। और ष्दक्षिणष् में गरीब अर्थात विकासशील देश आते है।

इबसा दक्षिण के तीन विकासशील देशों का संगठन है। जो श्दक्षिण.दक्षिण सहयोगश् के माध्यम से बना। श्दक्षिण. दक्षिण सहयोगश् से तात्पर्य है। दक्षिण.दक्षिण अर्थात विकासशील देशों के मध्य आर्थिक सहयोग के आधार की खोज । नई अतंर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना के लिये श्उत्तर.दक्षिण सहयोगश् के प्रयत्न किये गये थे किन्तु धनी विकसित देषों की हठधर्मिता एवम अडियल रूख के कारण कोई उत्साहजनक परिणाम नही निकले और विकासषील देषों की निर्धनता बढती गयी एऋणभार बढता गया । बजट घाटा बढता गया और व्यापार में असंतुलन बना रहा श्उत्तर.दक्षिण सहयोगश् की मृग मरीचिका के पीछे भागने के बजाय दक्षिण गोलार्द्व के विकासशील राश्ट्रों ने अपने त्वरित आर्थिक विकास के लिये ष्दक्षिण. दक्षिण आपसी सहयोगष् पर जोर देना प्रारम्भ कर दिया । ष्दक्षिण. दक्षिण सहयोगष् यह इंगित करता है। कि विकासशील राश्ट्रों को उत्तरी गोलार्द्व के विकसित राश्ट्रों पर अपने आर्थिक विकास के लिये निर्भर न होकर विकसित राष्ट्रों में ही आर्थिक सहयोग के ऐसे प्रयत्न करने चाहिये जिससे वे आत्मनिर्भरता की तरफ बढें।

इबसा का परिचय

इबसा एक अनोखा मचं है। जो तीन अलग.अलग महाद्वीपों के तीन बडे एवम प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों भारतए ब्रजीलए और दक्षिण अफ्रीका को एक मचं पर लाता हैए जी 8 शिखर बैंठक के दौरान 2 जूनए 2003 को एवियन (फ्रांस) में भारत के तात्कालीन प्रधानमंत्रीं तथा ब्रजील के तात्कालीन राश्ट्रपति और दक्षिण अफ्रीका के तात्कालीन राश्ट्रपति के बीच बैठक में इबसा की स्थापना पर विचार विमर्श किया गया । जब इन तीनों देशों के विदेश मत्रींयों की 6 जूनए 2003 को ब्रासीलिया में बैठक हुई तब इस समूह को औपचारिक रूप दिया गया। तथा तीनों देशों भारत अर्थात (INDIA), ब्राजील (BRAZIL), तथा दक्षिण अफ्रीका (SOUTH AFRICA), तीनों देशों के नाम के पहले अक्षर IBS। पर इसका नाम इबसा वार्ता मंच रखा गया और ब्रसीलिया धोषणा.पत्र जारी की गई अमेरिका और यूरोपिय सघं के दबदबे वाली विष्व आर्थिक व्यवस्था में विकसित देशों के हितों की रक्षा के लिये ब्राजीलिया घोषणा–पत्र के द्वारा भारतए ब्रजीलए और दक्षिण अफ्रीका का इब्सा संगठन 6 जूनए में बना। इस संगठन की मूल रूप रेखा इस बात से तय की गयी। कि तीनों देश विशाल है। तथा किसी भी कसौटी पर ये सयुंक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रबल दावेदार है। ये देश इस मचं के माध्यम से सुरक्षा परिषद की सरंचना में सुधार तथा इसमें स्थान प्राप्ति का प्रयास करेगें ।

13 सितम्बर, 2006 को भारत ब्राजील व दक्षिण अफ्रीका के समूह इबसा (IBSA) की पहली षिखर वार्ता ब्रजीलिया में सम्पन्न हुई जिसे प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने श्दक्षिण.दक्षिण सहयेगश् का एक ज्वलतं उदाहरण बताया । बातचीत के बाद जारी छः पृष्ठों के सयुंक्त घोशणा. पत्र में संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्काल सुधार और सुरक्षा परिशद के स्थायी सदस्यों की सख्यां बढानें को प्राथमिकता देने का फैसला किया गया डॉ0मनमोहन सिहं ने कहा कि ब्राजील को जहां एथेनॉल के उत्पादन एवम उपभोक्ता में विशेषज्ञता प्राप्त है। वहीं दक्षिण अफ्रीका को कोयले के गैसीकरण में तथा भारत को पवन उर्जा के उत्पादन में दक्षता प्राप्त है। अतः इन क्षेत्रों में तीनों देशों के पारस्परिक सहयेाग से उर्जा के क्षेत्र में भारी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

इबसा मच के तीन मुख्य बिन्दु है। पहला एवैश्विक एवम क्षेत्रिय राजनीतिक मुददों पर परामर्श एवम समन्यवय जैसे कि राजनीतिक एवम आर्थिक अभिशासन की वैश्विक संस्थाओं में सुधारए डब्ल्यूटीओंए एवम दोहा विकास एजेंडा, जलवायु

*शोध छात्रा डी0एस0बी0परिसर नैनीताल,राजनीति विज्ञान विभाग

परिवर्तनए आतकंवाद आदि दूसरा तीनों देशों में साझे लाभ के लिये 14 कार्य समूहों तथा 6 जन दर मचों के माध्यम से ठोस क्षेत्रों, परियोजनायें शुरू करके अन्य विकासशील देशों की सहायता करना।

अब तक इबसा की पांच शिखर बैठकों का आयोजन हो चुका है। इसकी प्रथम शिखर बैठक 13 सितम्बरए 2006 को पहली षिखर वार्ता ब्राजीलिया में सम्पन्न हुई जिसे प्रधानंमत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने श्दक्षिण दक्षिण सहयोगश का एक ज्वलंत उदाहरण बताया । इसके अध्यक्ष लूईज इनेसियो लूला डासिलवां थे । इबसा के तीनों सदस्य देशों ने अपने समझौते में षान्तिए सुरक्षाए और दीर्घकालीक अर्थव्यवस्थाएं के व्यापारए सामाजिक विकासए को स्थान दिया। सघींय राष्ट्रों में इबसा के सदस्य देषों के बहुपक्षीय तथा सर्वोच्च स्थान को महत्व दिया ।

दूसरी षिखर बैठक 17ए अक्टूबर 2007 को दक्षिण अफ्रीका में हुआ।

इबसा का तीसरी शिखर बैठक 15 अक्टूबरए 2008 को नई दिल्ली में भारत में सम्पन्न हुई। इसकी अध्यक्षता हमारे प्रधानमत्रीं डॉ0 मनमोहन सिहं ने की ।

इबसा की चौथी शिखर बैठक 15 अप्रैल, 2010 में ब्राजील की राजधानी ब्रजीलिया में सम्पन्न हुई इसकी अध्यक्षता लूईज इनेसियों लूला डा सिल्वइबसा की पाचवीं शिखर बैठक दक्षिण अफ्रीका की विधायी राजधानी प्रिटोरिया में हुई जिसकी अध्यक्षता जैकब जुमा ने की ।

इबसा की पाचवीं शिखर बैठक 18, अक्टूबर 2011 में दक्षिण अफ्रीका विधयी राजधानी प्रिटोरिया में सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता जैकब जूमा ने की थी ।

लाभ

इबसा के संगठन बनने के पश्चात भारत ने सयुंक्त राष्ट्र संघ में अस्थाई सीट को प्राप्त किया तथा तीनों देषों में भारत की स्थिति सबसे मजबूत हैं चूंकि भारत दोनों देषो के लिये एक बडे बाजार की भूमिका रखता है। तथा अर्थव्यवस्था में भारत का वर्तमान में तीसरा स्थान आ गया है। भारत तथा ब्राजील के बीच अधिक दूरी होने के कारण ब्राजील से व्यापार दक्षिण अफ्रीका की अपेक्षा कम है। भारत की सामस्याओं में भारत द्वारा कई समस्याओं भुखमरीए गरीबी, व्यापार, शुल्क, पर्यावरण, आंतकवाद भारत में व्याप्त सम्पूर्ण बिमारियों पर संबधित विशेषज्ञों द्वारा शोध के माध्यम से उसका हल करना रहा है। इबसा संगठन के पश्चात भारत की स्थिति बहुत मजबूत हो रही है। भारत ने सयुक्त राष्ट्र संघ में अपनी अस्थाई सीट को प्राप्त किया हैं

राजनीतिक एवम आर्थिक अभिशासन की वैश्विक संस्थाओं में सुधार डब्ल्यू 0टी0 ओ0 ध दोहा एंजेडा जलवायु परिवर्तन आतंकवाद आदि तथा तीनों देशों में साझें लाभ के लिये कार्य समूहों तथा 6 जनदर मंचों के त्रिपक्षीय सहयोग तथा तीसरा इब्सा निधि के माध्यम से विकासशील देषों में परियोजनायें शुरू करके अन्य विकासषील देषों की सहायता की इब्सा की सफलता एक महत्वपूर्ण प्रदर्शन को दर्षाती है। यह विशेषज्ञों के आदान प्रदान एवम प्रशिक्षण के परंपरागत क्षेत्रों से आगे दक्षिण दक्षिण सहयोग की वांछनीयता एवम संभाव्यता को बहुत सफल रूप से दर्शाती है। सेक्टोरल सहयोग को बढावा देने के लियें संयुक्त कार्य समूह स्थापित किये गये है। कार्य समूह हैं जैसे परिवहन स्वास्थ्य शिक्ष रक्षा विज्ञान एवम प्रौद्यौगिक व्यापार निवेश संस्कृति उर्जा प्रशासन एवम अभियान राजस्व प्रशासन मानव वास पर्यावरण एवम सामाजिक विकास । अपनी अपनी योजनाओं के अनुसार इन कार्य समूहों की बैठकें होती है। इब्सा के सदस्य देशों में चुकिं भारत सबसे बडा बाजार हैं। परन्तु भारत के ब्राजील के साथ व्यापार संबध कम है। अतः भारत को ब्राजील के साथ व्यापार संबधों को और बढाना चाहियें तथा भारत से ब्राजील की दूरी अधिक होने के कारण व्यापार पर प्रभाव पड रहा है। भारत को यूएनएससी की आंतकवाद विरोधी समिति के प्रमुख की जिम्मेदारी दी गई है। यह भारत के लिये एक उचित अवसर है। कि वह खतरे के विरूद्व लड़ने के वैश्विक कानूनी इक्कीसवीं सदी में भारत की यात्रा बहुत महत्वपूर्ण रही है। इस समयावधि में भारत अपनी

परम्परागत छवि का अवरण उतार कर नूतन वैश्विक पहचान बनाने में सफल रहा है। राष्ट्रमण्डल खेलो का आयोजनएसूचनाए तकनीक में वैश्विक धाकए सामरिक क्षेत्र में तेजी से बढ़ते कदम एखेल व चिकित्सा के क्षेत्र में नये आयाम सूचना का अधिकार और मानवधिकार पर व्यवहारिक पहल तथा अन्तरिक्ष अभियानों में सफलतायें कुछ ऐसी राश्ट्रीय घटनायें है। जिन पर हम गर्व कर सकते हैं वैष्विक शक्ति के श्रेणी क्रम निर्धारण में नेषनल इटेंलिजेस काउन्सिलं और यूरोपियन यूनियन इंस्टीट्यूट फॉर सिक्योरिटी स्टडीज की सयुंक्त रूप से प्रस्तुत ग्लोबल गर्वनेस 2005 नामक रिपोर्ट में अमेरिका और चीन के बाद भारत को सबसे शक्तिशाली देश स्वीकार किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत और चीन के साथ ब्रजील जैसे देशों की ताकत 2025 तक बहुत अधिक बढ जायेगी इसमें यह भी कहा गया है। कि 2010 में अमेरिका के पास 22 फीसदीए चीन के पास 12 फीसदी वैश्विक शाक्ति है इसमें 8 फीसदी वैश्विक शाक्ति के साथ भारत तीसरा सबसे षक्ति षाली राश्ट्र बन गया हैं ।

कानकुन में भी भारत की सराहना अनेक देशों द्वारा की गई भारत ने विकसित व विकासषील देषों के मतभेदों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई भारत की पहल पर कानकुन समझौते में उसके इस प्रस्ताव को शामिल कर लिया गया कि विभिन्न देश जलवायु परिवर्तन संबंधी अपनाये गये उपायों व प्रगति की समयबद्ध जानकारी दे भारत की ही पहल पर विकसित देशों से तकनीकी हस्तांतरण हेतु दो नई संस्थाओं की स्थापना की गयी, लेकिन भारत के लचीले रूख के कारण क्योटो सन्धि के बाध्यकारी लक्ष्यों को आगे नहीं बढ़ाया जा सका इससे विकसित देश तो संतुष्ट हैं, भारत में ही इस लचीले रूख की आलोचना पर्यावरण समूहों द्वारा की जा रही हैं

संदर्भ सूची

1. षर्मा ए0डी0ए राजनीतिक विज्ञानए अरिहन्त पब्लिकेशन
2- Latin America and the Caribbean. Bulletin FAL, No. 119. Santigo, Chile.
3- De, P. (2006). “India, Brazil, South Africa (IBSA) Economic Cooperation: Towards a
4- Department of Trade and Industry of South Africa. South African Trade Statistics. Pretoria,South Africa.
5- Fonseca, R., Azevedo, M. e Velloso, E. (2005). “O Potencial de Comércio entre Brasil e Índia:
6. Um Exame com Base nas Estruturas de Vantagem Comparativa”. Estudos CNI No. 3. Brasília,Brazil.
7- Hoffman, J., Isa, P. e Perez, G. (2001). “Trade and Maritime Transport Between Africa and
8- South America”. Série Recursos Naturais e Infra-Estrutura, No. 19. ECLAC, Santiago, Chile.

IBSA Dialogue Forum (2008).Somerset West Ministerial Communiqué.

(2007). New Delhi Ministerial Communiqué. :

9- Indian Ports Association (Several Yars). Operational Details of Ports.

Ministry of Commerce and Industry of India, Department of Trade (2008). Total Trade – Country Wise.

10- Ministry of Development, Industry and Trade (2008). Estatísticas de Comércio Exterior:
11- Puri, L. (2007). “IBSA: An Emerging Trinity in the New Geography of International Trade”.

Policy Issues in International Trade and Commodities, Study Series, No. 35. UNCTAD, Geneva, Switzerland.

11- ‘विश्व व्यापार संगठन वार्ता दोहा विकास एंजेडा (पीडीएफ)’ काग्रेंसनल रिसर्चसर्विसण 26 जुलाई 2008
12. ‘कैनकुन चुनौतीश ण्अर्थशास्त्री’ 4 सितम्बर 2003, 3 अगस्त 2008

13. व्यापार सुविधा पर समझौता : 7 दिसम्बर, 2013 की मत्रींस्तरीय निर्णय आधिकारिक विश्व व्यापार संगठन के बेबसाइट से 31 दिसम्बर, 2013 को अभिगम ।

External links

1- IBSA – India, Brazil, South Africa – News and Media

2. दोहा दौर की विश्व व्यापार संगठन की अधिकारिक साइट

समाचार पत्र एवम पत्रिकायें

1. सिविल सर्विसेज टाइम्स पेज 27 अप्रैलए 2008 मार्च, 2011
2. वर्ल्ड फोकस विशेष अकं जुलाईए 2011
3. ब्रिक्स शिखर सम्मेलन पेज 1 दृष्टकोण मंथन मई, 2011
4. इन्टरनेट
5. प्रतियोगिता दर्पण
6. समसामयिकी 2008, 2011
7. फ्रंटलाइन
8. द टाइम्स आफॅ इडिया, 3 अप्रैल, 2007
9. द हिन्दू